दुरुसुगा कृपजूचि सन्ततम्

रागम्: सावेरि ताळम्: आदि

(श्री श्याम शास्त्रि विरचित)

पल्लवि

दुरुसुगा कृपजूचि सन्तत-
मरोगदृढशरीरमुग सलुपुननु

अनुपल्लवि

परमपावनि कृपावनि विनुत

पदसरोज प्रणतर्त्तिहरु राणि

पराकु धर्मसंवर्द्धनि बहु-
परा कमलगुणा त्रिपुरसुन्दरि

चरणम्

नी सन्निधिनि जेरि गोलिचिन

निन्नेपुडु दलचे सुजनै-

दासजनभाग्यमेटु देलुपुदुनो

ओ सकललोकजननि विनु

ओंकारि नियति एटुलनो

नी साटेवरु ई जगम्बुलनु
ने निरतमुनु गोलिचिति ॥ १ ॥

एमो कलक जेन्दि मनमुन

ने नेच्चट गतिगानकनु

नी महिमलेल्ल चेवुलारु विनि

ई मनसुलोनि वेत दीर्चुट

कीवेळ निपुणवनि

कामाक्षि नीवे वेरेवरु गादनि दलचि गोलिचितिनि ॥ २ ॥

धराधरवि नीलकचलसिता सरस कविता निचित

सारघनसरसित धरहसिता

वारिरुह वारि वदनोचित

वागीश विनुत भृत नता

नारायणि श्यामकृष्ण नुत
ना मनविनि विनि गिरिसुता ॥ ३ ॥

स्वर साहित्यम्

सरोजनयन नतजनपालिनिवनि वेदमुल मोरलिगडा -
नितरुलेवरु मनवि विनु कृपासलुप पराकु सलुपरादिक नीविपुडु

◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇